B.A III

(Unit I) Date: / /

प्रसार शिक्षा

(EXTENSION EDUCATION)

प्र०1- सामुदायिक प्रसार शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ बताइए ?

उ० सामुदायिक प्रसार शिक्षा की प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं।

1- आवश्यक उपकरणों की कमी।
2- स्थानीय समस्याओं का हल्का प्रभाव
3- सरकारी विभागों में समन्वय की कमी
4- प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों का अभाव
5- ग्राम सेविकाओं की कमी।
6- जनता में पर्याप्त सहयोग का अभाव।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

प्र०2- फ्लैश कार्ड।

उत्तर- **फ्लैश कार्ड्स-** यह कार्ड्स की पूरी श्रृंखला होती हैं जिन्हें दर्शकों के सामने क्रम से प्रस्तुत करने पर पूरी कहानी स्पष्ट हो जाती हैं। कार्ड का आकार 50 cm x 70 cm. से अधिक नहीं होना चाहिए अधिक से अधिक दस बारह कार्डों पर चित्र या जानकारी लिखी होती हैं। चित्रों को दिखाने से पूर्व उससे सम्बन्धित जानकारी व्याख्या के माध्यम से देनी चाहिए तथा कार्डों को क्रम से दिखाना चाहिए

Date: / /

तथा उससे सम्बन्धित कठिनाइयों का हल भी करते जाना चाहिए।

प्र० 3: रेडियो की उपयोगिता बताइए।

-अथवा-

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में रेडियो की उपयोगिता बताइए।

अथवा-

रेडियो का महत्व बताइए।

उत्तर: आकाशवाणी एवं दूरदर्शन

कार्यक्रम: आज के वैज्ञानिक युग में रेडियो वार्ता एवं दूरदर्शन कार्यक्रम प्रसार कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। करीब 60% कृषि कार्यक्रम इन्हीं माध्यमों द्वारा संचालित हो रहे हैं। सरकार की तरफ से भी कृषि प्रसार कार्यक्रम एक आवश्यक राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में चलाया जा रहा है। अनुसंधानों से पता लगाया गया है, कि रेडियो वार्ता प्रसार तकनीक द्वारा लोगों के ज्ञान तथा दृष्टिकोण में विशेष परिवर्तन हुआ अतः ये, दोनों ही विराट सम्पर्क की श्रेष्ठतम प्रसार तकनीके हैं। इसमें निम्न-नियमों का पालन करके इन्हें और प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

1- जहाँ तक हो सके सरलतम भाषा का प्रयोग
2- कम-से कम Technical शब्दों का इस्तेमाल हो
3- कार्यक्रम सामयिक हो।
4- किसानों के खाली समय को ध्यान में
रखकर ही कार्यक्रम आयोजित किया जाय।
5÷ नवीन तकनीकों विधियों की पुनरावृत्ति हो।

प्र० 4:- कुछ महत्वपूर्ण संचार प्रक्रिया की अवधारणाओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- कुछ महत्वपूर्ण संचार प्रक्रिया की अवधारणाएँ ÷

1- प्रक्रिया → कोई घटना जो समयानुसार निरंतर परिवर्तनशील है। कोई भी निरंतर क्रिया या प्रतिपादन।

2- संहिताकारक → स्रोत के उद्देश्यों को प्रकट करने के उद्देश्य से स्रोत के विचार को लेकर उन्हें सांकेतिक प्रणाली में ढालना।

3- संदेश → स्रोत संहिताकारक का वास्तविक भौतिक उत्पादन। जैसे- बोलते समय विचार ही संदेश है। लिखते समय लेखन, पेन्टिग में तस्वीर तथा हाव-भाव के समय गतिविधि एवं अभिव्यक्ति ही संदेश है।

4- माध्यम → संदेश को वहन करने वाले को ही माध्यम मानते हैं।

प्राचार्य
मीरा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

5- संकेतवाचक → संकेत संदेश की पुनर्नुवाद की प्रक्रिया है जो इस प्रकार सुना है और निरीक्षण किया जा रहा हो जो प्राप्तकर्त्ता के लिए अर्थपूर्ण हो सके।

6- प्राप्तकर्त्ता → संचार का लक्ष्य। वह मनुष्य अथवा मनुष्यों का समूह जो प्रेषक के विपरीत छोर पर स्थित होते हैं।

7- सीख → यह वह परिवर्तन प्रक्रिया है जो मनुष्य के परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप से किये उद्दीपन एवं प्रतिवेदन के स्थायी सम्बन्ध में घटित होता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है। कि शिक्षण और सीख प्रक्रिया वास्तव में संचार की एक क्रिया है।

प्र०5- संचार प्रक्रिया के कुछ महत्त्वपूर्ण मॉडलों का उल्लेख कीजिए।

अथवा —

संचार के अरिस्टोटल मॉडल को समझाइए

अथवा —

संचार के मॉडल बताइए।

उत्तर:- संचार प्रक्रिया के कुछ महत्त्वपूर्ण मॉडल →

मॉडल का अभिप्राय, निर्देशन, स्पष्टीकरण तथा भविष्य कथन है—

प्राचार्य
... महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

1- अरिस्टाटिल मॉडल —

वक्ता → भाषण → श्रोतागण

2- केनेथबुक मॉडल →

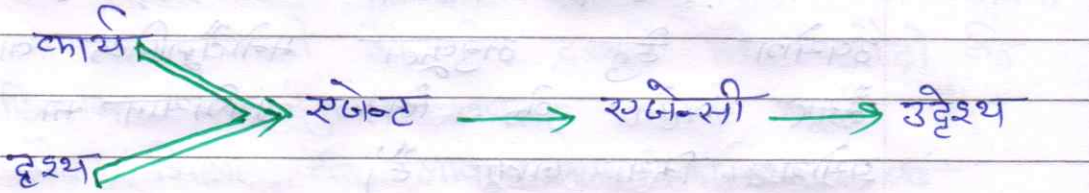

कार्य
दृश्य ⇒ एजेन्ट → एजेन्सी → उद्देश्य

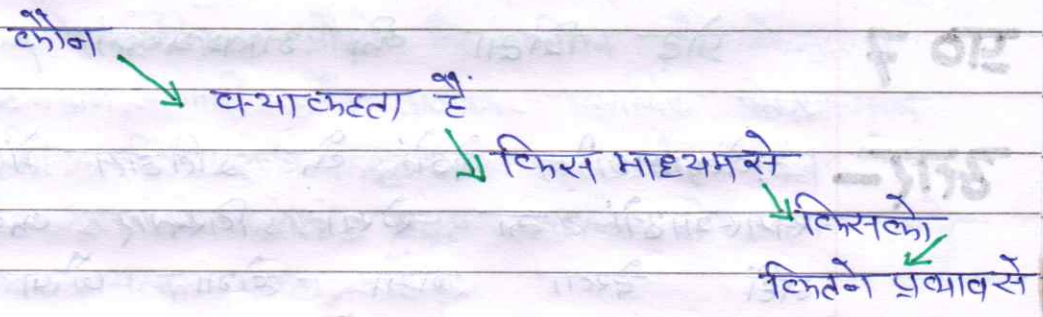

3- हेराल्ड लासवेल मॉडल →

कौन → क्या कहता है → किस माध्यम से → किसको → कितने प्रभाव से

प्र0 6- अभियान तकनीक क्या है? इसके उद्देश्य बताइए।

उत्तर÷ अभियान →

सामुदायिक सम्पर्क के लिए अभियान एक शक्तिशाली प्रसार तकनीक है जिसका उपयोग समुदाय के लोगों में रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से किया जाता है। समय विशेष पर किसी विशेष समस्या के समाधान के लिए थोड़ा समय

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

प्रयुक्त की जाती है। इस तकनीक का प्रयोग उस समय किया जाता है। जब कोई कार्य प्रणाली श्रेता के लोगों द्वारा ग्राह्य हो चुकी होती है।

उद्देश्य →

1- उन्नत विधियों के शीघ्र तथा व्यापक उपयोग हेतु अनुकूल मनोवैज्ञानिक वातावरण तैयार करने के लिए अभियान का प्रयोग किया जाता है।

2- समुदाय के लोगों की अधिकाधिक सहभागिता प्रदान करने हेतु।

प्र० 7 प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता।

उत्तर- विकासशील देशों के इतिहास में विभिन्न समस्याओं का ऐसा विस्तार कभी नहीं देखा गया होगा जैसा कि आज अनुभूत किया जा रहा है। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या, प्रत्येक नागरिक के लिये रोजगार निर्माण, पर्याप्त खाद्य उत्पादन की समस्या सभी के लिए पर्याप्त रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मनोरंजन की सुविधायें जुटाना आदि वे समस्यायें हैं। विकासशील देशों में शिक्षा का संकट अर्थात व्यापक निरक्षरता, शिक्षित बेरोजगारी, रोजगारपरक शिक्षा और तकनीकी शिक्षा का अभाव आदि के।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

पौढ़ मुख्य तत्य यह है कि औपचारिक शिक्षा व्यवस्था मुट्ठी भर विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करती है। जबकि समाज एक बड़ा भाग शिक्षा से अलग-थलग एवं अनुपादक बनकर रह जाता है। प्रौढ़ शिक्षा एक ओर औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की कमियों को पूरा करती है। तो दुसरी ओर प्रौढ़ो को विकास का दुसरा अवसर प्रदान करती है। प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता विकासशील एवं विकसित देशों में समान रुप से है यदि सचमुच कोई समाज शिक्षोन्मुख है। तो वह प्रौढ़ शिक्षा को नकार नहि सकता है। उद्देश्यपूर्ण, स्वनियोजन तथा स्वचालित शिक्षा प्रौढ़ो के जीवन को केन्द्रस्थ प्रश्न बन जाती है। प्रत्येक व्यक्ति शिक्षात्मक लक्ष्यों की एक श्रंखला बना लेता है। जिन्हें समाज द्वारा प्रदत साधनों से प्राप्त करने को प्रयत्न करता है।

प्र०8 प्रसार शिक्षा के अन्तर्गत किन विषयों का प्रशास किया जाता है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रसार शिक्षा के अन्तर्गत निम्नलिखित प्रसार सम्मिलित है।

1- कृषि प्रसार → कृषि सम्बन्धी समस्त ज्ञान प्रसार कृषकों को प्रदान करना

2- स्वास्थ्य प्रसार → स्वास्थ्य तथा स्वच्छता सम्बन्धी जन उपयोगी जानकारी ग्रामीण जनता को प्रदान करना

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

3- गृह विज्ञान प्रसार → महिलाओं को सन्तुलित एवं पौष्टिक भोजन, बच्चों की देखभाल, गृह प्रबन्ध रसोई बगीचे आदि से सम्बन्धित उपयोगी जानकारी देना।

4- पशुपालन तथा पशु चिकित्सा प्रसार → पशुओं के भोजन, प्रजनन पशुओं की देखभाल सम्बन्धी आवश्यक ज्ञान पशुपालकों तथा पहुँचना। पशुओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी और रोगों से सम्बन्धित

5- कृषि यान्त्रिकी प्रसार → कृषि सम्बन्धी उपकरणों का उपयोग रख-रखाव, मरम्मत आदि के सम्बन्ध में उपयुक्त जानकारी कृषकों तक पहुँचाना

6- औद्योगिक प्रसार → उद्योगों से प्रबन्ध तथा संचालन के सम्बन्ध में उपयोगी ज्ञान ग्रामीण लोगों तक पहुँचाना।

7- **डेरी प्रसार** → पशुओं के चारे चारे, उनकी देखभाल, नस्ल आदि की जानकारी प्रदान करना जिससे इसका उत्पादन बढ़ाया जा सके और दुध व उससे सम्बन्धित पदार्थों का उत्पादन एवं उपयोग।

प्र०9- प्रसार शिक्षा के सिद्धान्त।

उ० संक्षेप में प्रसार शिक्षा के सिद्धान्त हैं।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

Date: / /

1- प्रसार कार्य अनुभूत आवश्यकताओं पर आधारित हो न कि ऊन पर लादा जाये। उनके दैनिक जीवन से सम्बन्धित दैनिक जीवन की शिक्षा दी जाये।

प्रसार शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य

(AIMS AND OBJECTIVES OF EXTENSION EDUC-ATION)

प्रसार शिक्षा का आविर्भाव ग्रामोत्थान तथा ग्रामीणों को बेहतर जीवन-स्तर प्रदान करने हेतु हुआ है। हार्ने के अनुसार -

"ग्रामीण जनसंख्या का जीवन स्तर ऊँचा उठाना तथा भूमि, जल एवं पशुधन का समुचित उपयोग ही प्रसार कार्यक्रम का मूल लक्ष्य है। ग्रामीणों का विकास ही प्रसार शिक्षा का मूल लक्ष्य है। कृषकों के ज्ञान को बढ़ाकर उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि करके पैदावार को बढ़ाया जा सकता है। इससे आमदनी में वृद्धि होना सुनिश्चित है। आमदनी बढ़ने करके पैदावार को बढ़ाया जा सकता है।

अध्ययन की दृष्टि से प्रसार शिक्षा के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को अग्रलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1- शैक्षिक उद्देश्य (Educaritiational objectives)

2- भौतिक उद्देश्य (Materialistic objectives)

20/8/20

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया